B.A - I. Topic - 'Pragmatism' (अर्थक्रियावाद) (1)
Paper - II
Lec - II
Dr. Ashish Kumar Pandey.

भिन्न विचारक -

यद्यपि इस सिद्धान्त को अस्पष्ट रूप से हम दर्शन के इतिहास में प्राचीन, आधुनिक सभी काल में पाते आये हैं, परन्तु इसका सही एवं विकसित रूप हम समकालीन दर्शन में एक विशेष सम्प्रदाय व्यवहारवादी (Pragmatism) के विचार में पाते हैं। इनमें पर्स (Peirce), जेम्स (James), डीवी (Dewey) एवं शीलर (Shiller) विख्यात हैं।

पर्स का विचार — उनके अनुसार ज्ञान या विचार प्रक्रिया विश्वास-संदेह-विश्वास, इन तीन स्थितियों से गुजरती है। हमारे वैज्ञानिक अन्वेषण का लक्ष्य है असंदिग्ध विश्वास को स्थापित करना। किसी भी अन्वेषण की शुरुआत संदेह से होती है, मगर हमें संदेह का अन्त करते हुए विश्वास को फिर से स्थापित करना है। वैज्ञानिक प्रक्रिया या [illegible] की प्रक्रिया से चलना होगा। पर्स इस विश्वास को स्थापित करने के लिए केवल वैज्ञानिक पद्धति को मानते हैं, क्योंकि वर्षों से वैज्ञानिक असंदिग्ध विश्वास की स्थापना में सबूत इस पद्धति का प्रयोग करते हुए जुटे हुए हैं।

जेम्स का विचार — जेम्स का मुख्य लक्ष्य सत्यता सिद्धान्त का प्रतिपादन था। पर्स से ही प्रभावित होकर उन्होंने अपने व्यवहारिकतावाद को भिन्न ढंग से पेश किया। यद्यपि पर्स की तरह उन्होंने परिणामों एवं व्यवहारों को ही सत्यता का निर्णायक माना, मगर जेम्स ने इनकी उपयोगिता की प्रधानता की व्याख्या की। उन्होंने इसमें सफल-असफल ही एवं इच्छा के माध्यम से मूल्य की व्याख्या की, उपयोगी-अनुपयोगी, वांछनीय-अवांछनीय जैसे तत्वों को जोड़ दिया। हमारे संवेदन, विचार, विश्वास, धारणाएँ सभी हमारे व्यवहारिक जीवन से निकट संबंध है। इस जीवन को सफल बनाने में इनकी उपयोगिता एवं महत्ता है।

डीवी का विचार — डीवी सत्यता की चर्चा अपने अन्वेषण के संदर्भ में करते हैं। वे पर्स से ज्यादा निकट हैं, जबकि जेम्स के थोड़े भी विचार [illegible]। समस्या आने पर उत्पन्न होता है कोई विचार तो सत्य होगा जब समस्या का अन्त होता है। समस्या को सुलझाने की शक्ति अगर विचार प्रदर्शित करे तो उसमें उसे उचित मानना युक्तिसंगत होगा। इसी कौशल [?] आता है।

धारणा को इसी आन्तरिकतापूर्ण (संगति) कार्यता या कसनीयता कहते हैं। जिस विचार में यह उपस्थित हो, वही विचार सत्य होगा। अतः सत्यता या असत्यता विचारों को प्राप्त होती है, तदनुसार भी होती, अवस्था से ही यह प्राप्त होगी।

शिलर का विचार — शिलर जेम्स की तरह सत्य तथा उपयोगिता को समानार्थक नहीं मानते क्योंकि उपयोगिता से सत्य के उद्भव का संबंध है, न कि ... है। परन्तु शिलर के अनुसार सभी विचार प्रारम्भ में न सत्य है, न असत्य। उनमें सत्यता-दावा (Truth Claim) होता है, तथा व्यवहारिक-अनुभव उनमें सत्यता मूल्यांकन प्रक्रिया करता है द्वारा उसकी परीक्षा होती है। अतः सत्यता मानव निर्मित कहा जाता, यहाँ है। इसी कारण शिलर ने सत्य को मानव निर्मित कहा है, यहाँ सत्य निरपेक्ष नहीं है। मानवीय होने के कारण सतत नये-नये ढंग से निर्मित होता रहता है।

भारतीय विचार — जैन दर्शन आंशिक रूप से व्यवहारिकता है। यहाँ बौद्ध दर्शन भी व्यवहारवादी बहुत अवगत। इनके अनुसार कोई भी विचार, प्रतिज्ञप्ति या विश्वास स्वतः सत्य नहीं होता बल्कि इनकी सत्यता सफल कार्य-व्यापार उत्पन्न करने में ही निहित रहती है। वही विचार या ज्ञान सत्य होगा जो सफलतापूर्वक क्रियान्वित हो, अतः शुरू में अपने आप में कोई विचार या ज्ञान प्रामाणिक या अप्रामाणिक रहता है एवं जब व्यवहार में सफल कार्य-संपादक सिद्ध होता है, तभी सत्य प्रमाणित होता है। अतः असत्य सहज गुण है परन्तु सत्यता अर्जित गुण है।

— X —